B-A - Sem-VI

प्रत्ययवाद की सामान्य विशेषताएँ

प्रत्ययवाद (Idealism) के अनुसार विश्व का मूल तत्व चेतन या अध्यात्मिक है। विश्व की आधारभूत सत्ता चैतन्य प्रत्यय आत्मा या मन है भूत या जड़ नहीं। मूल तत्व के आध्यात्मिक होने से तत्वतः सारा विश्व ही आध्यात्मिक या चिदात्मकरूप अर्थात अभौतिक है यदि कोई पदार्थ भौतिक लगता है तो वह प्रतीत मात्र है। वास्तविक नहीं। प्रत्ययवाद का दावा है कि जो भौतिक जान पड़ता है वह प्रत्ययवाद नहीं। प्रत्ययवाद का दावा है कि जो भौतिक जान पड़ता है वह भी प्रत्ययात्मक है, आत्मा या मन का विकास है। मोटी बुद्धि से देखने पर सचमुच जगत भौतिक लगता है किन्तु सूक्ष्म बुद्धि पर परखने पर वह वस्तुतः आध्यात्मिक सिद्ध होता है इस प्रकार भौतिक तत्व का कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। आत्मा ही एकमात्र परमार्थ तत्व है। वह भूत पर निर्भर नहीं करता किन्तु भूत को आत्मा का मुँह जोड़ना पड़ता है क्योंकि वह आत्मा का विवर्त है।

प्रत्ययवाद की प्रवृत्ति अप्रकृतिवाद है।

क्योंकी प्रकृति की व्याख्या के लिए प्राकृतिक नियमों को वह पर्याप्त नहीं मानता, देशकाल में व्याप्त जगत को वह अपूर्ण, परतन्त्र मानता है और उसकी व्याख्या के लिए आत्मा या चैतन्य को आवश्यक समझना है क्योंकि वह उसका आधार है. परम तत्व को आध्यात्मिक मानने से प्रत्ययवाद का ईश्वरवाद से कोई स्वभाव विरोध नही है क्योंकि ईश्वर को ईश्वरवाद आध्यात्मिक ही मानता है। प्राय: प्रत्ययवाद के समर्थन ईश्ववादी बन जाते है। बल्कि अधिकाश प्रत्ययवादी ईश्वर को परम तत्व मानते है। प्रत्ययवाद यंत्रवाद का विरोधी है क्योंकि विश्व प्रक्रिया को वह अर्थहीन या निष्प्रयोजन नही मानता है। विश्व को मूलत: आध्यात्मिक मानने के कारण आध्यात्मिक मूल्यों को वह वास्तविक मानता है और विश्व-प्रक्रिया को प्रयोजनपूर्ण। विश्व-प्रक्रिया का प्रयोजन इन मूल्यों की सिद्धि है। इसलिए वह प्रयोजनवाद का समर्थन करता है।